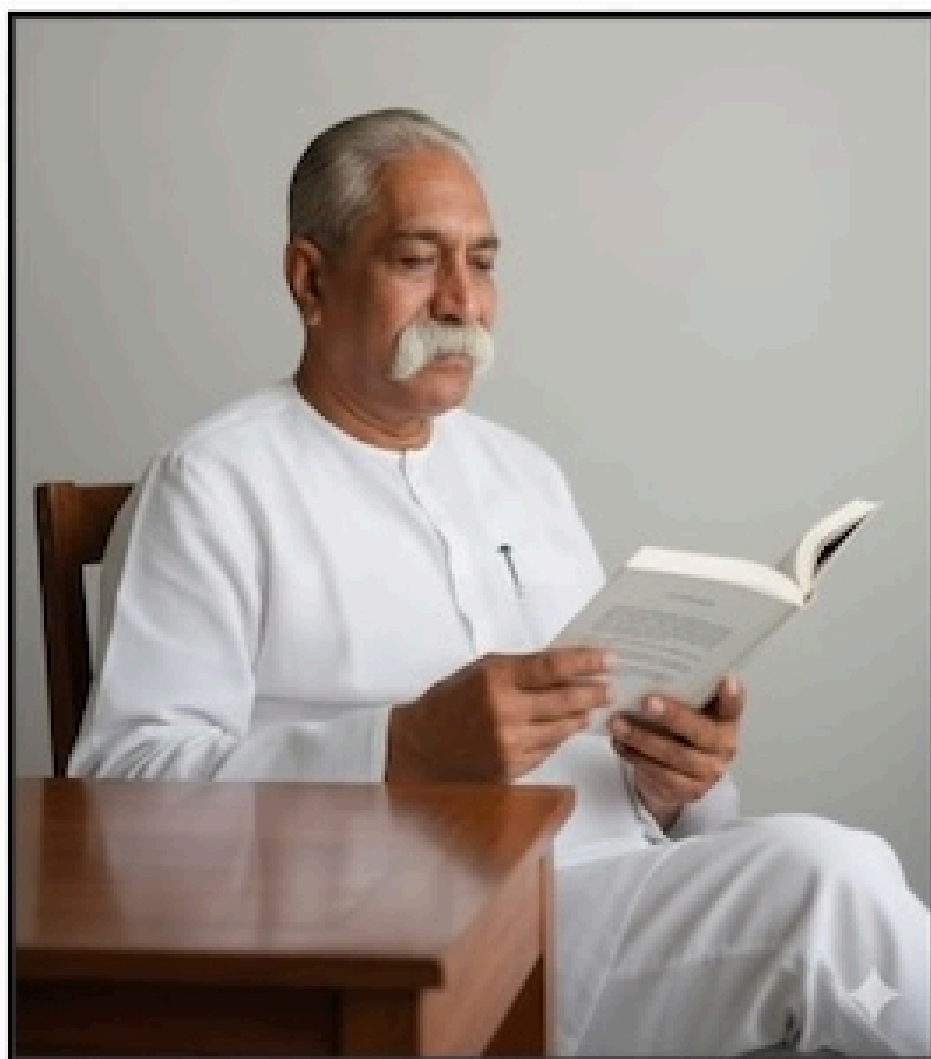


1

ज़हूर बख़्श

सम्पूर्ण कहानियाँ



सं. डॉ. एम. फ़ीरोज़ ख़ान

सम्पूर्ण कहानियाँ

खण्ड-1

मूल लेखक
ज़हूर बख़्श

संकलन/सम्पादक
डॉ. एम. फ़ीरोज़ ख़ान



विकास प्रकाशन, कानपुर

भूमिका

एक साहित्यिक सेवक ने साहित्य की इतनी सेवा की और फिर भी वह साहित्य के व्योम में उजागर ना हो सका, हिंदी साहित्य के पटल पर वह चमक कर भी धुंधला गया। जिस तरह से कई साहित्य के सेवकों ने हिंदी साहित्य की सृजना की, उसकी कीर्ति साहित्य के आकाश पर फैल जानी थी। वह कीर्ति कहीं धूमिल हो गई, इस बात का बहुत खेद रहेगा कि, ऐसे सच्चे, ऊर्जावान, गंभीर साहित्यकारों की साहित्यिक सेवा को साहित्यिक समाज ने उपेक्षा दी। यह तो भला हो डॉ. एम. फ़ीरोज़ खान (सं. वाङ्मय पत्रिका) का जिन्होंने मुस्लिम साहित्यकारों का हिंदी के प्रति लगाव, झुकाव, सेवा-भाव और सृजनशीलता को पूरे संसार के सामने लाने का महनीय, प्रशंसनीय और निस्वार्थ प्रयास किया है। कई मुस्लिम साहित्यकारों को वह निरंतर खोज कर लाते रहे हैं और उन्हें साहित्य के पटल पर पुनर्स्थापित करते रहे हैं। ऐसे ही एक प्रमुख साहित्यकार जो द्विवेदी काल के रचनाकार माने जाते हैं और उनका नाम साहित्य-सृजन में निरंतर चलता रहा। उस समय की महत्वपूर्ण पत्रिकाओं—चाँद, आजकल, माधुरी, सरस्वती, सुधा, कल्पना आदि के माध्यम से अपनी कहानियों को लोगों तक पहुँचाया और सराहे गए। ऐसे महत्वपूर्ण साहित्यकार ज़हूर बख़्श हैं, जिन्होंने हिंदी साहित्य की सेवा निरंतर करते हुए; साहित्य को समृद्ध ही नहीं किया, बल्कि विविधताओं से भर दिया और उन विविधताओं, विशेषताओं के बीच वे अपनी साहित्यिक भूमि पर खड़े नज़र आते हैं। ज़हूर बख़्श का साहित्य कोई सामान्य या मामूली साहित्य नहीं है, उन्होंने अपने समय और समाज की परिधि में रहते हुए उन सब घटनाओं को अपनी कहानियों का विषय बनाया जो जीवन में—वे देखते, सुनते और समझते हैं। उन्होंने यथार्थ भूमि से उठाकर कहानियों को ऐसे विषय दिए जो उस समय अछूते माने जाते थे। उनकी कहानियों का संपूर्ण रंग समाज के इर्द-गिर्द मानवीय रिश्तों में बंधा हुआ है। उनके साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह समाज में मानवीयता को ज़िंदा रखने का निरंतर प्रयास करते हैं। चाहे उनकी कहानी यथार्थ समाज की कहानी हो या बालबोध, मनोविज्ञान की कहानी

या यूँ कहें कि पुराख्यान से संबंधित कहानी हों, सभी में एक चिंता प्रमुख रूप से नज़र आती है; वह है मानवीयता की चिंता। उनका साहित्य किसी भी दशा में मनुष्य की प्रतिष्ठा, विश्वास, ईमानदारी, सद्भाव इत्यादि को कम होते नहीं देखना चाहता है। वह अपनी कहानियों में निरंतर इस बात की चिंता करते हैं कि, मनुष्य का समाज, उसका समस्त व्यवहार इस दुनिया को बहुत बेहतर बना दे।

उनके कथा-साहित्य में साफ़गोई एक महत्वपूर्ण तथ्य नज़र आता है, जिसके माध्यम से वह कहानियों को उजागर करते हैं। कहानी इतनी स्पष्ट होती है कि पाठक को तुरंत प्रभावित करती हैं और कहानी उस पर एक विशेष प्रकार की छाप छोड़ती हैं। उनकी कहानियों में गति और लय का संतुलन अत्यंत महत्व रखता है। कहानियाँ तेज़ गति में आगे बढ़ती हैं और पाठक को बांधे रखने के लिए वे अपने में एक विशेष प्रकार का हुनर लिए हुए हैं। कहानियाँ सिर्फ़ कथ्य के माध्यम से आगे नहीं बढ़ती हैं, बल्कि उन कहानियों में एक विशेष प्रकार की नाटकीयता का दर्शन भी हमें साथ-साथ होता चला जाता है। इसमें कोई दो राय नहीं है कि उनकी कहानियों के कथ्य को नाटकीयता के अंदाज़ में भी पेश किया जा सकता है। अर्थात् यह कहना बिल्कुल ग़लत नहीं होगा कि, वह कथा-तत्त्व के साथ-साथ नाटकीयता का तत्त्व भी अपनी कहानियों में सहज रूप में उपलब्ध करा देते हैं। यह तो उस सृजनशील व्यक्तित्व की प्रतिभा, कल्पना और प्रयास होना चाहिए जो ज़हूर बख़्श कहानियों में से नाटकीयता भर दे और उन्हें नाटक के रूप में मंचन के लिए तैयार कर ले। मेरी दृष्टि में उनकी कहानियों में कहीं ऐसी बाधा नज़र नहीं आती जो कथ्य वह नाटक का रूप ना ले सके। नाटक के कई प्रकार हैं, उन प्रकारों में इन कहानियों को सहज रूप में ढाला जा सकता है।

ज़हूर बख़्श यूँ तो मुख्य रूप से एक साहित्यिक कलाकार हैं, उन्हें किसी जाति, धर्म में बाँधने की आवश्यकता नहीं या यूँ नहीं कहा जा सकता है कि ज़हूर बख़्श एक मुस्लिम साहित्यकार हैं, खेमे में बाँटना, जाति, धर्म में बाँधना एक प्रकार से उन्हें सीमाओं में बाँध देना है, क्योंकि जाति, धर्म का लेखन से कोई सरोकार नहीं। हाँ, इतना आवश्यक माना जा सकता है कि कोई भी रचनाकार जिस जाति धर्म का होगा उसे उसी माहौल में रहना होगा, वह ना चाह कर भी उस माहौल से पीछा नहीं छुड़ा सकता है। उसकी पृष्ठभूमि का सारा कैनवास उसे जाति और धर्म का ही होता है। ज़हूर बख़्श भी अपनी जाति और धर्म के कैनवास से अछूते नहीं रहे। उन पर भी मुस्लिम समाज का एक व्यापक प्रभाव पड़ा है और उसे समाज के इर्द-गिर्द वह अपनी कई कहानियाँ रचते हैं। फिर भी वे लगातार भारतीय सांस्कृतिक विरासत को ग्रहण करते हैं और अपनी कहानियों का आधार पुराख्यान को बनाते हैं। वर्तमान राजनीति ने जैसा ज़हूर समाज में घोला है और सब को बाँट दिया है तो अब ये न चाहते हुए भी स्वीकार करना होगा की कौन किस जाति, धर्म का रचनाकार है!

ज़हर बख़्श कहानियों में मुस्लिम समाज की समस्याओं, त्रासदियों का उजागर होने के साथ उनकी सामाजिक बदहाली की स्थिति का भी चित्रण देखने को मिलता है। केवल बदहाली नहीं बल्कि रूढ़ि, परंपरा, पर्दा-प्रथा तथा महिलाओं की दैनिक स्थिति, अनाधिकार की भावना भी विशेष रूप से उजागर होती है। ज़हर बख़्श का साहित्य महिलाओं के संदर्भ में अत्यंत संवेदनशील, पक्षधर और महिलाओं की पीड़ाओं, समस्याओं को उजागर करने वाला साहित्य है। उनकी अधिकांश कहानी महिलाओं के प्रति हो रहे अन्याय को उजागर करती हैं और उन्हें समाज में वह हक़ दिलाने का प्रयास करती हैं जो स्त्री का अधिकार है। मुझे ज़हर बख़्श महिलाओं के हिमायती नज़र आते हैं और यहाँ तक महसूस किया जा सकता है कि उनके भीतर महिलाओं का कहीं-न-कहीं कोमलतम अंश विद्यमान है। वह स्त्रियों की चिंता करते हुए सोचते, विचारते हैं और महिलाओं की बदहाल स्थिति के विषय में कहानियों के माध्यम से अभिव्यक्ति देते हैं। उनकी यह चिंता सीधी बात में वर्णनात्मक शैली में या लेख लिख देने वाली चिंता नहीं है, बल्कि वे स्त्रियों की समस्याओं, कठिनाइयों, त्रासदियों को कहानियों के कलेवर में लपेटकर प्रस्तुत करते हैं; जिससे और भी अधिक प्रभाव पाठक पर पड़ता है, क्योंकि वह उसके मानस पर सीधे प्रभाव डालती है। उनकी कहानियों में महिलाओं के मनोविज्ञान को बख़ूबी दर्शाया गया है। पुरुष मनोविज्ञान महिलाओं के मनोविज्ञान को ग्रहण नहीं कर पाता है, यह नहीं कहा जा सकता है कि, वह इस मनोविज्ञान में पूरी तरह महिलाओं के मनोविज्ञान को उतार लेते हैं, बल्कि यह माना जा सकता है कि, महिलाओं के मनोविज्ञान को वे पुरुष के मनोविज्ञान के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं और महिलाओं के पक्ष में खड़े हो जाते हैं।

ज़हर बख़्श कहानियों में सांप्रदायिकता की समस्या भी प्रमुख रूप से उजागर होती है, क्योंकि सांप्रदायिक समस्याओं को उन्होंने निकट से देखा है और अपने जीवन में भोगा भी है। कई जगह वे कहानी में सांप्रदायिकता की धधकती हुई आग को दर्शाते हैं और स्पष्ट करते हैं कि, सांप्रदायिकता समाज के लिए ख़तरनाक ही नहीं, बल्कि निरंतर पनपता, गहराता हुआ एक ख़तरा है, जिसको समाज में कभी कोई स्थान नहीं मिलना चाहिए, परंतु अब भी सांप्रदायिकता मौजूद है, खेद है। ज़हर बख़्श इस बात पर भी अफ़सोस प्रकट करते हैं कि, सांप्रदायिकता का तनाव और ज़हर समाज में पहले से मौजूद था और आने वाले समय में भी यह तनाव और ज़हर फैलता चला जाएगा, आज हो भी यही रहा है। उनकी कई कहानियाँ सांप्रदायिकता की विभीषिका को दर्शाती हैं और पाठकों को सचेत करती हैं कि यदि समाज इसी पथ पर चलता रहा तो अवश्य एक दिन यह समाज मानवी समाज नहीं रहेगा, बल्कि दानवी का समाज हो जाएगा। सांप्रदायिकता की समस्या को वह बाहर से छूकर नहीं लौट जाते हैं, बल्कि जहाँ से सांप्रदायिकता उत्पन्न होती है, उस मनोविज्ञान को टटोलकर निकलते हैं और अपनी

कहानियों के माध्यम से पाठकों के समक्ष लाकर प्रस्तुत कर देते हैं। छोटी-छोटी आदतें, छोटी-छोटी बातें, छोटे-छोटे ख्याल, छोटी-छोटी चिंगारियाँ सांप्रदायिकता की आग को जलाने के लिए काफी होती हैं। वह इस बात पर अपनी कहानियों में ज़ोर देते हैं कि, यह जो छोटी-छोटी अवस्थाएं हैं, यही सांप्रदायिकता की चिंगारियाँ हैं जो आगे चलकर एक धधकती हुई आग में परिवर्तित हो जाती है और ये आग समाज को जलाकर राख कर देती है।

ज़हूर बख़्श अपनी कहानियों में मानवीय नैतिकता के पक्ष को बराबर उजागर करते हैं। उनकी कहानियों का गहराई से मूल्यांकन किया जाए तो नैतिकता के मानदंड पर उनकी कहानियाँ समाज को उच्चता प्रदान करने के साथ सुधार की संभावनाओं का संकेत करती हैं। यह सहज रूप में कहा जा सकता है कि द्विवेदीकालीन नैतिकता का प्रभाव उन पर देखा जा सकता है, परंतु यह थोथा प्रभाव नहीं है, बल्कि वह अपनी कहानियों में इस बात को आभास करते हैं कि, नैतिकता ही एक ऐसा मूल्य है जिसके माध्यम से समाज को बेहतर बनाया जा सकता है। इसलिए उनकी कहानी नैतिकता के पक्ष को पुरज़ोर तरीके से उजागर करती हैं। ज़हूर बख़्श की कहानियों का प्लॉट या विषय व्यापक विस्तार लिए हुए है। वह अपने जीवन के जिस भी क्षेत्र में रहते हैं, वह उसका बारीकी से अध्ययन करते हुए पड़ताल करते रहते हैं। उनकी कहानियों के विषय व्यापक, विविध, सूक्ष्म और बहुत महत्व के हैं। वे केवल महिलाओं पर केंद्रित रचनाएँ नहीं लिखते हैं, बल्कि समाज की उन अनदेखी स्थितियों को भी चित्रित करते हैं, जिनमें सदा जीवों का महत्व रहा है। उनकी कहानियों में जीवों की चिंताएं भी देखने को मिलती हैं और जीव केंद्रित कहानियाँ भी हमें प्राप्त होती हैं। यह उनकी संवेदनात्मक क्षमता का ही परिणाम है कि वह मनुष्य के साथ जीवों पर भी चिंता प्रकट करते हुए उनकी वस्तुस्थिति का चित्रण कर मानवी समाज के साथ समन्वय करने का प्रयास करते हैं। इस दृष्टि से वह बेहद संवेदनशील मनुष्य हैं, साहित्यिक कलाकार हैं जो समाज की आवश्यकताओं, महत्व, नैतिकताओं, अधिकारों और समन्वय को अपनी कहानियों का आधार बनाते हैं और कहानियों का सृजन करते हैं।

ज़हूर बख़्श की कहानियों में एक और बात यह देखी जा सकती है कि उनकी कहानियाँ जीवन की कहानियाँ हैं और त्रासद जीवन की कहानियों को वह रेखांकित करते चले जाते हैं, लेकिन वहाँ आकर ठहर जाते हैं; जहाँ जीवन को मौत का सामना करना होता है। उनकी कहानियों में मृत्यु की त्रासदी को गहराई से महसूस किया जा सकता है और इस बात को भी महसूस किया जा सकता है कि ज़हूर बख़्श मौत के आगे विवश नज़र आते हैं। यह उनका मनोविज्ञान है जो वह मृत्यु की त्रासदी को कहानियों में गहराई के साथ उजागर करते हैं। ज़हूर बख़्श का जीवन दर्शन अत्यंत व्यापक, सूक्ष्म और विविधता लिए हुए हैं; इसलिए उनके कहानियों में आए हुए चरित्र और पात्र जीते-जागते

नज़र आते हैं। कहानियाँ पढ़ने पर हमें महसूस होता है कि यह तो हमारे ही समाज के आसपास की वस्तुस्थितियों का चित्रण है, यह रोज़मर्रा के पात्रों के जीवन की घटनाओं, उनके व्यक्तित्व को दर्शाया गया है। इसलिए उनकी कहानियों में सजीवता, जीवटता, जिजीविषा एवं परिवेश का यथार्थ बोध है। ज़हूर बख़्श की कहानियों की एक विशेषता यह भी है कि, वह कहानियों में परिवेश की पकड़ निरंतर बनाए रखते हैं और उसे परिवेश की पकड़ में विषय को बैठाने का प्रयास करते हैं। वे परिवेश पर अधिक कलम चलाते हैं और कहानी को विस्तार के साथ बुनते चले जाते हैं ताकि परिवेश के माध्यम से चरित्र, घटनाएं, व्यक्तित्व सजीव होते रहें और होता भी ऐसा ही है कि वह इतने लंबे परिवेश का चित्रण करके कहानी को ऐसा बनाते हैं कि कहानी हमें आँखों के सामने बिंबात्मक रूप में नज़र आने लगती है। परिवेश के विस्तार के साथ वे कहानियों में कथ्य और संप्रेषण पर भी बहुत ज़ोर देते हैं, उनकी कहानियों के कथ्य अत्यंत सरल, सहज और तेज़ गति से चलने वाले हैं जो संप्रेषणीयता को साथ में लेकर चलते हैं। कहानी में कहीं भी असंप्रेषण का व्यवधान नहीं आता है, क्योंकि वह कहानी को बाँधकर इस तरह प्रस्तुत करते हैं कि पाठक जब तक संपूर्ण कहानी को पढ़ नहीं लेता, तब तक वह बेचैनी की हालत में रहता है।

ज़हूर बख़्श कहानियों के माध्यम से समाज को सामंती प्रणाली के चुंगल से मुक्ति के हामी हैं और उस पर चोट करते हैं। इस दृष्टि से माना जा सकता है कि, वह लोकतंत्र के हिमायती हैं, परंतु लोकतंत्र की अवस्था को क़रीब से देखने से पूर्व ही वह इस दुनिया से अलविदा कर गए। फिर भी यह स्पष्ट है कि ज़हूर बख़्श सामंती प्रणाली के ख़िलाफ़ हैं और अपनी कहानियों में सामंती प्रणालियों, शोषण दृष्टि, उसकी कुव्यवस्थाओं की आलोचना करते हैं। उन्होंने इस संदर्भ में किसान की पीड़ा को भी अपनी कहानियों का विषय बनाया और दर्शाया है कि, सामंती प्रणाली किसान को बहुत हद तक बर्बाद ही नहीं करती, बल्कि मृत्यु की कगार तक पहुँचा देती है। सामंतों की असंवेदनशीलता, अनीति, बर्बरता, अत्याचार और ज़ोर-ज़बरदस्ती की अवस्था को कहानियों का विषय बनाते हैं जिससे ऐसा लगता है कि पाठक दर्शक बनकर उसे स्थिति का जायज़ा ले रहा है। कहा जा सकता है कि ज़हूर बख़्श की कहानियाँ समाज की किन अवस्थाओं को नहीं छूती? वह उन समस्त अवस्थाओं को छूती है जहाँ-जहाँ ज़हूर बख़्श पहुँचते हैं और उन समस्याओं को उजागर करते हैं, जहाँ मानवी जीवन त्रासदियों का शिकार होता चला जा रहा है।

इसके अतिरिक्त ज़हूर बख़्श की कहानियों में बाल जीवन की स्थितियों का चित्रण भी देखा जा सकता है क्योंकि वह बाल जीवन से संबंधित कहानियाँ को भी रचते हैं और बाल जीवन के मनोविज्ञान को भी निरंतर कहानियाँ का विषय बना लेते हैं। उनकी शैली में बाल-जीवन, मनोविज्ञान का विस्तार है। बाल साहित्य के प्रति ज़हूर बख़्श

का विशेष लगाव रहा है। उस विस्तार का परिणाम यह है कि बाल साहित्य की कहानियों की संख्या लगभग पाँच सौ से अधिक हैं। लगभग एक हजार उनके आलेख हैं, वे साहित्य के लिए महत्वपूर्ण होने के साथ एक थाती भी हैं। साथ-ही-साथ यह भी कहा जा सकता है कि ज़हूर बख़्श की कहानी बोध कथा के संसार की कहानियाँ भी हैं, जिनमें हमें बाल-सुलभता, शिक्षाप्रदता, मानवी मूल्य, संस्कार और आदर्शवादी स्थितियों का पता चलता है। हो सकता है यह उसे समय का प्रचलन (ट्रेंड) रहा हो कि वह बोध कथाओं को इस प्रकार रचते हैं कि वह पुराख्यानो से मिश्रित होते हुए सामाजिक मूल्यों की कहानी बन जाती हैं। इस दृष्टि से ज़हूर बख़्श को यथार्थवादी रचनाकार की स्थिति से खारिज नहीं किया जा सकता है, उनकी कहानियों में बोध कथा का समावेश से पुराख्यान आधारित, मूल्यवादी संस्कारों की कहानी भी वह रचते हैं, परंतु इन सब के पीछे यथार्थवादी संसार को वह मूल्य प्रदान करना है; जिससे समाज सुचारु रूप से बंधा हुआ शांति के पथ पर अग्रसर हो सके। उनकी कहानी ऐतिहासिकता के परिप्रेक्ष्य में भी रची गई कहानियाँ हैं, जिनमें इतिहास को दर्शाने का प्रयास किया गया है। कहानियों में उपलब्ध ऐतिहासिकता भी हमें समाज को सुचारु और संपन्न बनाने के लिए प्रयोग-सी नज़र आती है। उस समय की वस्तुस्थिति ही इस प्रकार की रही होगी जिसमें पत्र-पत्रिकाओं में बोध कथा, पुराख्यान या इतिहास संबंधित विषय आधारित कहानियों का प्रकाशन का प्रचलन रहा होगा, इस दृष्टि से भी वह एक सफल कहानीकार हैं।

ज़हूर बख़्श के गुरु कामता प्रसाद जैसे गुरु रहे हैं तो भाषाओं, ज्ञान और भाषाई पकड़ को हम ज़हूर बख़्श के साहित्य में प्रमुख मानकर चलते हैं। वास्तव में उनकी कहानियों से गुज़रने पर यह साफ़ नज़र आता है कि उनकी भाषा में जहाँ स्पष्टता, सरलता, सहजता, गति, प्रभाव, लय बना हुआ है। उनकी भाषा में कहानीपन भी मौजूद है, कथ्य का कहन यदि किसी को सीखना है तो ज़हूर बख़्श की कहानियों से सीखा जा सकता है। उनकी कहानियों की भाषा व्यक्तित्व, चरित्र और पात्रों में बंधी हुई भाषा है जो जीवन जगत की व्यवहार वाली भाषा को उजागर करती है। उनकी कहानियों में जहाँ एक और पृष्ठभूमि के अनुसार शब्दों का चयन है, वहीं कहावतों को इस प्रकार कहानी में रखते हैं कि वह सहजता से भाषा को और भी समृद्ध बना देती है। बहुत-सी कहावतें ऐसी आई हैं जिनका प्रचलन अब साहित्य में नदारद हो चुका है। यह सब कहावतें और मुहावरे उनकी कहानियों में जानबूझकर ठूस नहीं दिए गए हैं, बल्कि उनका सहज प्रवाह उनकी भाषा में उपस्थित हो जाता है। उनकी कहानियों को पढ़ते हुए भारतीय समाज की कहावतें, मुहावरे हमें समृद्ध करती चली जाती हैं और हम नए-नए मुहावरों, कहावतों से परिचित होते चले जाते हैं। नए-नए मुहावरे, कहावतें इसलिए कहा जाएंगे, क्योंकि जिन कहावतें और मुहावरों को समाज में पहले प्रमुख स्थान था, अब वह लोप हो चुके हैं और लगभग लोप भी होने की कगार पर हैं, इसलिए अब सबके लिए नवीन हैं। अब

समाज इस तरह की मुहावरे और कहावतों का इस्तेमाल अपनी भाषा में कहाँ करता है, इसलिए माना जा सकता है कि उनके द्वारा रचित कहानियाँ में आए हुए मुहावरे और कहावतें एक संग्रह के रूप में देखना चाहिए। रचनाकार जिस अवस्था में जन्म लेता है, जिस परिवेश में पलता, बढ़ता है और जिस समाज में रहता है, उसका प्रभाव उस पर अवश्य पड़ता है। प्रभाव के साथ वह भाषा वहीं से सीखता है, इसलिए ज़हूर बख़्श की कहानियों में तत्कालीन समाज की भाषा की बुनावट हमें दिखाई पड़ती है। उनकी कहानियों में अरबी, फ़ारसी के शब्दों का सहज प्रयोग हुआ है, परंतु जहाँ कहानियाँ अपना विषय बदल लेती हैं, चाहे वह बोध कथा की कहानियाँ हों या पुराख्यान से संबंधित, फिर वहाँ शब्दों का चयन भी बदल जाता है। इससे हमें पता चलता है कि एक साहित्यिक कलाकार को किन-किन बातों का ध्यान रखना होता है, अपनी भाषा को संप्रेषणीय बनाने के लिए किन-किन शब्दों का चयन कैसे करना होता है; इस बात का बोध ज़हूर बख़्श अपनी कहानियों में निरंतर बनाकर चलते हैं। वे अपने कथा साहित्य में स्थानीय बोलियों को अत्यधिक महत्त्व देते हैं। अधिकतर उनकी कहानियों में बुंदेली शब्दों का प्रभाव देखा जा सकता है, क्योंकि वे जिस क्षेत्र में जन्म लेते हैं वह बुंदेलखण्ड का सागर मध्य प्रदेश क्षेत्र है, जहाँ बुंदेली बोली का प्रभाव उनकी कहानियों में सहज रूप से उपस्थित हुआ है।

ज़हूर बख़्श की कहानियाँ विशिष्ट प्रयोग शैली की कहानी नहीं हैं, बल्कि वे शैली पर अधिक ज़ोर न देकर कथ्य पर, घटनाओं पर, विषय पर अधिक ज़ोर देते हैं। शैली की दृष्टि से उनकी कहानी वर्णनात्मक कहानियाँ ही कही जाएँगी, परंतु कहीं-कहीं उन्होंने पत्रात्मक शैली की कहानी भी लिखने का प्रयास किया है। यह पत्रात्मक शैली की कहानी सप्रयास नहीं है, बल्कि सहज और स्वाभाविक रूप में लिखी हुई कहानी है जो उनके शिल्प का एक रूप उजागर करती है। हाँ, इतना अवश्य कहा जा सकता है कि उनकी कहानी के शिल्प में नाटकीयता अवश्य प्रमुख रूप से उभरकर आई है। जैसी परंपरागत कहानी होती है, उन कहानियों का जैसा प्लॉट होता है, वैसे ही ज़हूर बख़्श की कहानियों का भी प्लॉट है। ज़हूर बख़्श कहानियों में अनुशासन का एक भाग हमें दिखाई पड़ता है, जिस तरह से वे अपने जीवन में अनुशासन प्रिय रहे हैं और ऐसी अनुशासन की क्षमता उनके गुरुओं से उन्हें प्राप्त हुई थी, ऐसी ही अनुशासन की क्षमता उनके संपूर्ण साहित्य में हम देख सकते हैं। वस्तुतः यह कहा सकता है कि ज़हूर बख़्श अपने समय के एक बेहतरीन, महत्त्वपूर्ण रचनाकार रह चुके हैं, लेकिन अब समय आ चुका है उनके साहित्य का उचित मूल्यांकन करते हुए उनके साहित्य को सब तक पहुँचना चाहिए ताकि एक अप्रतिम रचनाकार के महत्त्व से समाज विमुख, अज्ञान न रहे, बल्कि जुड़ सके। यह कहानी-संग्रह ज़हूर बख़्श की प्रतिभा, लेखन क्षमता, साहित्य सेवा, उनकी गद्यात्मकता का अवलोकन कराने के साथ उनके कहानी साहित्य के आयामों से अवगत कराता है।

12 :: सम्पूर्ण कहानियाँ

मैं डॉ. फ़ीरोज़ ख़ान की प्रशंसा करता हुआ यह समस्त पाठकों से कहता हूँ कि ये उनकी दृष्टि है जो वे नवीन योजनाओं को कड़ी मेहनत से सँजो रहे हैं, उन साहित्यकारों को पुनः प्रकाश में ला रहे हैं जो समय की धूल की परतों में नीचे कहीं दब गये, धुंधला गये।

14 सितंबर 2025
(हिंदी दिवस)

प्रो. (डॉ.) मोहसिन ख़ान
विभागाध्यक्ष एवं शोध निर्देशक
जे. एस. एम. महाविद्यालय,
अलिबाग-रायगड (महा.)

अनुक्रम

भूमिका-प्रो. मोहसिन ख़ान	5
1. शबनम	15
2. ईद के दिन-	30
3. कुरबानी	39
4. मिलन	49
5. समस्या	60
6. लोहे की बेड़ियों से अधिक दृढ़	69
7. रहस्य	83
8. पराजित	94
9. ममता	111
10. वंशी वाला	121
11. बड़ा कौन!	128
12. पराजय	133
13. दवाई	138
14. घर-भर जाग उठा	147
15. व्यवधान	160
16. भविष्य-वाणी	167
17. खुदकुशी	174
18. कयामत के इंतज़ार में	183
19. बुधिया	193
20. हम भंगी हैं	203
21. हवा का रुख़	214
22. हारजीत	221

23. लज्जा	235
24. कर्जदार	245
25. कबरी	253
26. मान के लिये	261
27. हज	270
28. बागी	274
29. मैं पतित कैसे हुई ?	284
30. बहु-विवाह का करुण-दृश्य	295
31. वेश्या की आत्म-कथा	308
32. आहुति	322
33. मारवाड़ी वेश्या	332
34. स्त्रियों की बिक्री	354
35. आधुनिक नवयुवक	371
36. झेंप	383
37. श्री फाईव	384
38. वनमानुस की चुप्पी	390
39. परिणाम	393
40. आसेब	395
41. अपनी-अपनी समझ	403
42. तुर्की टोपी	410
43. चूड़ियाँ	417
44. विजय-मंत्र	424
45. चित्र का रंग	429
46. आदत	432
47. मनुष्य का विष	438

परिशिष्ट

दो शब्द (शबनम, कहानी-संग्रह)	443
आमुख	444
दो शब्द (स्फुलिंग, कहानी-संग्रह)	445